पुराण का लक्षण :-

'लक्षणप्रमाणाभ्यां वस्तुसिद्धिः' इस नियम के अनुसार पुराण का लक्षण क्या है? यह जिज्ञासा उत्पन्न होना स्वाभाविक ही है। इस प्रश्न का समाधान प्रस्तुत करते हुए प्रायः सभी पुराणों में निम्न श्लोक प्राप्त होता है-

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च ।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥

पुराण के साथ 'पञ्चलक्षण' का इतना घनिष्ठ सम्बन्ध है कि यह शब्द अमरकोश में बिना किसी व्याख्या के प्रयुक्त हुआ है। पुराण की सर्वत्र मान्य परम्परा के अनुसार सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर तथा वंशानुचरित - ये ही पाँच विषय वर्णनीय माने गये हैं; किन्तु विचारदृष्टि से प्रतीत होगा कि पुराण का मुख्य विषय सृष्टिविद्या ही है। पुराण का प्रारम्भ जहाँ सृष्टि से होता है वहीं उसका अन्त प्रलय से। इन दोनों के मध्य में होने वाले विशाल कालखण्डों अर्थात् मन्वन्तरों का, राजवंशों का तथा महत्वशाली राजाओं का विवरण देना ही पुराण का पुराणत्व है। इनका संक्षिप्त विवेचन निम्न प्रकार है-

(i) सर्ग :-

अव्याकृत गुणक्षोभात् महतस्त्रिवृतोऽहमः ।
भूतमात्रेन्द्रियार्थानां सम्भवः सर्ग उच्यते ॥

जगत् की तथा उसके नाना पदार्थों की उत्पत्ति

अथवा सृष्टि 'सर्ग' कहलाती है। तात्पर्य यह है कि जब मूल प्रकृति में विद्यमान गुणों में क्षोभ उत्पन्न होता है तब महत् तत्व की प्राप्ति होती है। तदुपरान्त उस महत् तत्व से सत्त्व, रज तथा तम से युक्त त्रिविध अहंकार की सृष्टि होती है। इन त्रिविध अहंकार से पञ्चतन्मात्रा, इन्द्रिय तथा पञ्चभूतों की उत्पत्ति होती है। इसी उत्पत्ति क्रम को 'सर्ग' कहा जाता है।

(ii) प्रतिसर्ग :-

नैमित्तिकः प्राकृतिको नित्य आत्यन्तिको लयः।
संस्थेति कविभिः प्रोक्ता चतुर्धास्य स्वभावतः॥

सर्ग के विपरीत वस्तु प्रतिसर्ग कहलाती है। यह प्रलय नैमित्तिक, प्राकृतिक, नित्य तथा आत्यन्तिक रूप से चार प्रकार की होती है।

(iii) वंश :-

राजा ब्रह्मप्रसूतानां वंशस्त्रैकालिकोऽन्वयः।

अर्थात् ब्रह्मा के द्वारा समुद्भूत राजाओं एवं उनकी सन्तान परम्परा को 'वंश' नाम से जाना जाता है। श्रीमद्भागवत में इस शब्द के अन्तर्गत प्रधानतः राजवंश का ही वर्णन प्राप्त होता है किन्तु अन्य पुराणों में इस शब्द के अन्तर्गत ऋषियों की वंशपरम्परा का वर्णन प्राप्त होता है।

(iv) मन्वन्तर :-

मन्वन्तर मनुर्देवा मनुपुत्राः सुरेश्वरः ।
ऋषयोंऽशावताराश्च हरेः षड्विधमुच्यते ।।

मनु, देवता, मनुपुत्र, इन्द्र, सप्तर्षि और भगवान के अवतार - इन छः विशेषताओं से युक्त काल को 'मन्वन्तर' कहते हैं। मन्वन्तर चतुर्दश है। प्रत्येक मन्वन्तर का स्वामी एक विशिष्ट 'मनु' हुआ करता है। जिसके सहयोग के रूप में देवता, पुत्र, इन्द्र, सप्तर्षि तथा स्वयं भगवान् हुआ करते हैं।

(v) वंशानुचरित :-

वंशानुचरितं तेषां वृत्तं वंशधराश्च ये ।

वंशानुचरित के अन्तर्गत पूर्वोक्त वंशों में जन्मे वंशधरों का तथा मूल पुरुष के रूप में राजाओं का विशिष्ट विवरण कहा जाता है। जिसमें मनुष्य वंश में उत्पन्न महर्षियों का तथा महापुरुषों का चरित्र समाविष्ट होता है। राजनीति विषयक ग्रन्थों में नवीन प्रकार का 'पुराणं पञ्चलक्षणम्' प्राप्त होता है जो कि पूर्वोक्त पौराणिक लक्षण से भिन्न है। कौटिल्य अर्थशास्त्र की व्याख्या में जयमंगला कृत टीका में प्राचीन ग्रन्थ का यह श्लोक उद्धृत है -

सृष्टि - प्रवृत्ति - संहार - धर्म - मोक्ष प्रयोजनम् ।
ब्रह्मभिर्विविधैः प्रोक्तं पुराणं पञ्चलक्षणम् ।।